उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० जितेन्द्र सिंह गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)

दीपांजली
शोधार्थिनी
शिक्षा विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

सारांशिका

प्रत्येक मनुष्य जन्म से कुछ विशिष्ट गुणों के साथ उत्पन होता है। शिक्षा मनुष्यों के इन्हीं विशिष्ट गुणों का क्रमबद्ध, चरणबद्ध तथा संपूर्ण विकास कर मनुष्य को समाज मे रहने योग्य समाजोपयोगी नागरिक बनाती हैं। सूचनाओं, मूल्यों, विश्वासों व कौशलों के अधिग्रहण या अधिगम को सुविधाजनक बनाने की प्रक्रिया को शिक्षा कहा जाता है। जिस प्रकार स्वस्थ भारीर के लिए भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार सुखी व सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। यह हमारे भविश्य का निर्माण करती है। शिक्षा एक संगठित प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति या बालक ज्ञान, समझ और अनुभव प्राप्त करता है। इसके साथ ही सुदृढ कौशल और सुदृढ मनोवृति भी शिक्षा का ही परिणाम है। अतः यह कहा जा सकता है कि सभ्य समाज के लिए शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है, जिससे समाज की विभिन्न बुराइयों का उन्मूलन कर उसका उत्थान किया जा सकता है। उचित शिक्षा के माध्यम से जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। NCF-2005 स्पश्ट रूप से बताता है कि सभी बच्चे स्वाभाविक रूप से अधिगम के लिए प्रेरित होते है और सीखने में सक्षम होते हैं। अर्थ बनाना और अमूर्त सोच, प्रतिबिंब और कार्य के लिये क्षमता विकसित करना अधिगम के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं जिन्हें बच्चे विभिन्न तरीकों से सीखते हैं। NCF-2005 मे रट्टा मारने के बजाय विद्यार्थियों में तर्क और रचनात्मक क्षमता को प्रोत्साहित करने पर भी बल दिया गया है इसलिए सीबीएसई ने छात्रों के H O T S (उच्च क्रम सोच कौशल) को आँकने के लिए परीक्षा पैटर्न में भी बदलाव किया है। इस प्रकार शिक्षार्थियों की चिंतनशील सोच क्षमता को विकसित करना आवश्यक हो जाता है जिससे विद्यार्थी प्रसन्नतापूर्वक अधिगम कर सके और अपनी अधिगम शैली को रूचिकर बना सकें।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना है जिसके लिए न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 100 छात्रों एवं 100 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थियों की अधिगम शैली के स्तर को ज्ञात करने के लिए के0 एस0 मिश्रा (2012) द्वारा निर्मित (अधिगम शैली मापनी) का प्रयोग किया गया। शोधार्थिनी द्वारा आंकडों के विश्लेशण के लिए क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। आंकडों के विश्लेशण से ज्ञात हुआ कि छात्रों की अधिगम शैली, छात्राओं की अधिगम शैली से बेहतर है। जिसका कारण छात्रों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उनकी सक्रियता एवं रूचि इत्यादि रहें हैं।

मुख्य बिंदु : उच्च माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, अधिगम शैली, अधिगम भौली मापनी एवं चिंतनशील सोच।

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्तियों की क्षमताओं और संभावना को विकसित करने की प्रक्रिया है ताकि उस व्यक्ति को किसी विशिष्ट समाज या संस्कृति में सफल होने के लिये तैयार किया जा सके। (Aremu, 2000)

मनुष्य एक तर्क संगत प्राणी है, उसे तर्क करने की शक्ति प्राप्त है और यह भाक्ति उसे किसी भी अवधारणा को समझने में सक्षम बनाती है। किसी भी व्यक्ति के व्यवहार को निधार्रित करने में अधिगम महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधिगम जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है। यह केवल विद्यालयी शिक्षा, साइकिल चलाना, पढना, लिखना इत्यादि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक भाब्द है जो कि व्यक्ति पर अपना स्थायी प्रभाव डालता है। प्रत्येक व्यक्ति आजीवन सीखने वाला होता है, लेकिन क्या सभी की सीखने की शैलियाँ समान होती है? लेकिन सामान्य ज्ञान कहता है कि नहीं? जिसके सन्दर्भ में अनेक शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों द्वारा समय–समय अनेकों शोध की गयी है। आधुनिक शिक्षण सिद्धांत बताता है कि प्रत्येक छात्र की अधिगम शैली भिन्न होती है। कुछ छात्र वातावरण से प्रभावित होकर सीखते है तो अन्य छात्रों पर वातावरण का कोई प्रभाव नहीं पडता। इसी प्रकार कुछ छात्र समूह में अधिक अच्छा सीखते है तो कुछ छात्र अकेले में सीखते है तथा कुछ छात्रों को उत्प्रेरणा की आवश्यकता होती हैं। अतः छात्र–छात्राएँ ज्ञान को ग्रहण करने के लिए भिन्न–भिन्न अधिगम शैलियां अपनाते हैं। अधिगम शैली शब्द को पहली बार 334 ईसा पूर्व अरस्तू द्वारा मान्यता दी गई थी। जिनका मानना था कि, प्रत्येक बच्चे में विशिष्ट प्रतिभाएं और कौशल होते हैं।

(Reiff & National Education Association, W. D. 1992)

अधिगम शैलियों की अवधारणा तभी से विकसित हुई है। जब अरस्तू ने यह समझना शुरू किया कि बच्चों में विभिन्नताएं होती हैं, फिर अनेक शोधकर्ताओं ने अधिगम शैलियों के बारे में अपनी–अपनी अवधारणाएं बनानी शुरू कर दी थी। इन शोधकर्ताओं में से एक, स्मअ टलहवजोल, ने 1978 में अपने स्वयं के सीखने के सिद्धांतों पर प्रयोग करना शुरू किया। वायगोत्स्की का मानना था कि सामाजिक शिक्षा एक बच्चे के विकास से पहले होती है क्योंकि एक बच्चे का विकास सामाजिक बातचीत से होता है। उनका यह भी मानना था कि बच्चे का विशिष्ट वातावरण इस बात को प्रभावित करता है कि बच्चा कैसे सोचता है और बच्चा किसके बारे में सोचता है। इस सिद्धांत के साथ–साथ, वायगोत्स्की का मानना था कि किसी छात्र की चीजों से अर्थ निकालने की क्षमता के विकास में बच्चे का समुदाय सबसे बड़ी भूमिका निभाता है। दूसरी ओर, सिद्धांतकार जीन पियाजे का मानना था कि सीखने से पहले एक बच्चे का विकास होना चाहिए। पियाजे का मानना था

कि संज्ञानात्मक विकास सभी संस्कृतियों में सार्वभौमिक है। वायगोत्स्की के सिद्धांतों के विपरीत, पियाजे का मानना था कि बालक का विकास उसके स्वतंत्र अनुभवों से प्रभावित होता है।

रोहताश (2021) ने महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में (एकेडमिक अचीवमेंट एंड लर्निंग स्टाइल्स ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू एक्स्ट्रावर्जन इंट्रोवर्शन डायवर्जेंट थिंकिंग एंड लोकस आफ कंट्रोल) का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में शोधकर्ता द्वारा पाया गया कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अधिगम शैली व अपसारी चिंतन के मध्य सकारात्मक सहसंबंध था और विद्यार्थियों के द्वारा किसी भी वस्तु को एक अलग दृष्टिकोण से देखने की क्षमता बेहतर अधिगम शैली से जुडी हुई होती है।

कुलविंदर कौर (2022) ने पंजाब विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में (अचीवमेंट इन सोशल साइंस अमोंग सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू लर्निंग स्टाइल्स स्कूल एनवायरनमेंट एंड पैरेंटरल इंवॉल्वमेंट) का अध्ययन किया। जिसके निष्कर्ष में शोधकर्ता द्वारा बताया गया कि सामाजिक विज्ञान की उपलब्धि व माता–पिता की भागीदारी के मध्य सकारात्मक संबंध होता है।

नानावेयर, आर.बी.ने (2023) में एम इ आई आर जार्नल ऑफ़ एजुकेशनल स्टडीज ट्रेंड्स प्रैक्टिस में (अ स्टडीज ऑन अकादमिक अचीवमेंट इन रिलेशन टू इन लर्निंग स्टाइल्स ऑफ़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स) का अध्ययन किया। जिसके निष्कर्ष में उन्होंने बताया कि पहले सीखने की प्रमुख पद्धति श्रवण थी जिसमे अब द्रश्य और गतिज जैसी शिक्षण पद्धतियों का प्रभाव उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर महत्वपूर्ण रूप से दिखाई देता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व–

अधिगम शैलियों की प्रासंगिकता हमारी शिक्षण व्यवस्था में गहराई से अंतर्निहित है। हमारी सामान्य शिक्षण तकनीकें विभिन्न शिक्षण शैलियों वाले शिक्षार्थियों की इच्छाओं को पूरा नहीं करती हैं। परिणामस्वरूप, जहां कुछ छात्र वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझने में सफल होते हैं, वहीं कई अन्य विशय में महारत हासिल करने में उनकी रूचि की परवाह किए बिना प्रचलित शिक्षण–दृष्टिकोण के साथ उनकी सीखने की शैली के बेमेल होने के कारण मानकों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते हैं। इसलिए वे छात्र अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

संचित वैज्ञानिक समझ के बड़े समूह को प्रभावी ढंग से ज्ञान को प्रसारित करने के प्रयास में, व्याख्यान और प्रत्यक्ष निर्देश के प्रभुत्व ने, विशेष रूप से हाई स्कूल में, शिक्षण शैलियों की एक सापेक्ष अवधारणा बनी हुई है। लेकिन अधिक विविध शिक्षण रणनीतियों के माध्यम से छात्रों की पहुँच बढ़ाने के लिए अनेक रणनीतियाँ विकसित की गई हैं, लेकिन इन रणनीतियों का व्यापक रूपसे उपयोग नहीं किया जाता है। व्याख्यान विधि एक अत्यधिक उपयोग की जाने वाली विधि है जो सभी प्रकार के शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती है। इसके लिए बच्चे की गतिविधियों और जरूरतों पर नजर रखने के अलावा उपयुक्त शैक्षणिक प्रथाओं और निर्देशों को उन्नत करने की आवश्यकता है।

हम निकट भविष्य में 21वीं सदी में प्रवेश कर रहें हैं। जनसंख्या विस्फोट और तेजी से बढते ज्ञान के कारण हमारा शैक्षणिक ढाचा सिकुड़ गया है। ज्ञान और कौशल के आधार पर हमें इसमें संतुलन बनाना होगा। हमारी शिक्षा का पुनर्गठन करने के लिए तथा उनके बीच स्वयं को और समाज को शिक्षित करने के लिए आधुनिकीकरण का सहारा लेना होगा। आज यह कहा जा सकता है कि भारत का भाग्य उसकी कक्षाओं में आकार ले रहा है। हमारी स्कूली शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना का जागरण करना होना चाहिए। हम राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य में जो प्रगति प्राप्त करते हैं वह सीधे तौर पर हमारे स्कूल, कॉलेजों और विश्व विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त कर निकलने वाले छात्रों के गुणों पर आधारित होती है।

समस्या कथन :

"उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन"।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों व ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों व कला वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों व ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों व कला वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमायें–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा हापुड़ जनपद के उत्तर प्रदेश बोर्ड के कक्षा 11 एवं कक्षा 12 के कला एवं विज्ञान वर्ग के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समष्टि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के हापुड जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कक्षा 11 एवं कक्षा 12 के कला एवं विज्ञान वर्ग के समस्त विद्यार्थियों को समष्टि के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श चयन पद्धति –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी द्वारा हापुड जनपद के विभिन्न विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। प्रतिभागियों का चयन 16–19 वर्ष के आयु वर्ग के मध्य किया गया

है। उपलब्धता के आधार पर यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन हेतु प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु के०एस० मिश्रा (2012) द्वारा निर्मित (अधिगम भौली मापनी) का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी प्रविधियाँ–

प्रस्तुत अध्ययन में आंकडों के विश्लेशण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात आदि सांख्यिकी को प्रयुक्त किया गया है।

प्रदतों का विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या–

1. विश्लेषण– अध्ययन का उद्देश्य संख्या–उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पित परिकल्पना 01 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम संख्या	चर	N	मध्यमान M	मनक विचलन S.D.	df	क्रान्तिक अनुपात का मान "CR "	0.05*सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष
1.	छात्र	100	172.67	8.16	198	2.54	सार्थक
2.	छात्रा	100	169.59	8.38			

0.05 सार्थकता स्तर पर df का सारणी मान = 1.98

परिणाम की व्याख्या–

उपरोक्त तालिका संख्या 01 में अधिगम शैली प्रपत्र पर प्राप्त 200 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों (जिनमें 100 छात्र तथा 100 छात्राएं है) के प्रदत्तों का मध्य मान क्रमशः 172.67 व 169.69 और मानक विचलन क्रमशः 8.16 व 8.38 तथा क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान 2.54 है और प्राप्त क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान स्वतंत्रता के स्तर कत्रि 198 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर सारणी मान 1.98 से अधिक है। इसलिए यह प्राप्तमान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है और प्रतिपादित परिकल्पना H01 को अस्वीकार किया जाता है। इस प्रकार यह परिणाम इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली में सार्थक अंतर है।

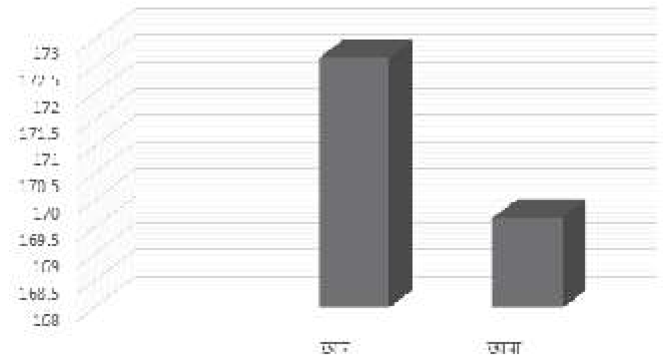

दण्ड आरेख संख्या – 1.1

परिणाम की विवेचना–

उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली में अंतर पाया गया। जिसमें छात्रों की अधिगम शैली का मध्यमान 172.67 और छात्राओं की अधिगम शैली का मध्यमान 169.69 है। जो इस बात का संकेत देते हैं कि छात्रों की अधिगम शैली, छात्राओं की अधिगम शैली से बेहतर है। जिसका कारण छात्रों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उनकी सक्रियता एवं रूचि इत्यादि रहें हैं।

2. विश्लेषण 2–अध्ययन का उद्देश्य संख्या– उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों व ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पित परिकल्पना 02–उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों व ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम संख्या	चर	N	मध्यमान M	मनक विचलन S.D.	df	क्रान्तिक अनुपात का मान "CR'	0. 05*सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष
1.	ग्रामीण विद्यार्थी	90	169.12	8.05	198	3.13	सार्थक
2.	शहरी विद्यार्थी	110	172.77	8.30			

0.05 सार्थकता स्तर पर 'CR' का सारणी मान = 1.98

परिणाम की व्याख्या रू उपरोक्त तालिका संख्या 02 में अधिगम शैली प्रपत्र पर प्राप्त 200 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों (जिनमें 90 ग्रामीण विद्यार्थी तथा 110 शहरी विद्यार्थी है) के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 169.12 व 172.77 और मानक विचलन क्रमशः 8.05 व 8.30 तथा क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान 3.13 है और प्राप्त क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान स्वतंत्रता के स्तर कत्रि 198 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर सारणी मान 1.98 से अधिक है। इसलिए यह प्राप्तमान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है और प्रतिपादित परिकल्पना–HO2 को अस्वीकार किया जाता है। इस प्रकार यह परिणाम इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों व ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली में सार्थक अंतर है।

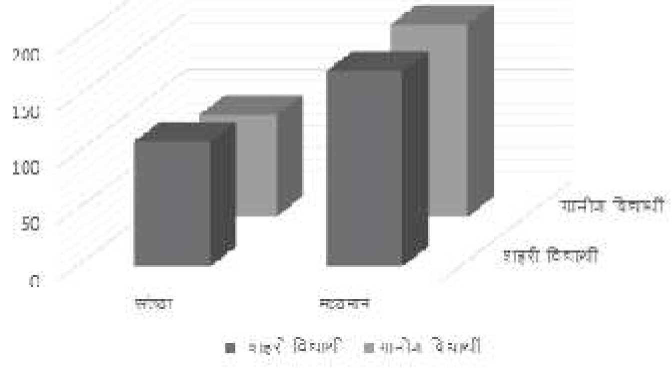

दण्ड आरेख संख्या – 1.2

परिणाम की विवेचना : उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली की तुलना में

बेहतर है जिसका कारण शहरी विद्यार्थियों को प्राप्त होने व उनके द्वारा प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न शैक्षिक उपकरण व शहरी विद्यार्थियों के पास ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक शैक्षिक विकल्प थे। वे द्रश्य, अनुभवों को अधिक पसंद करते थे और वे समूह में भी अधिक अध्ययन करते थे जबकि ग्रामीण विद्यार्थी एकांत में अकेले अध्ययन करना पसंद करते थे (सिंह सामबीर, 2021 द्वारा उद्धृत)।

3. विश्लेषण 3–अध्ययन का उद्देश्य संख्या– उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों व कला वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पित परिकल्पना HO3–उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों व कला वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम संख्या	चर	N	मध्यमान M	मनक विचलन S.D.	df	क्रान्तिक अनुपात का मान “CR'	0. 05*सार्थकता स्तर पर निष्कर्ष
1·	कला वर्ग	100	169.08	8.39	1.98	3.62	सार्थक
2.	विज्ञान वर्ग	100	173.26	7.90			

0.05 सार्थकता स्तर पर 'CR' का सारणी मान = 1.98

परिणाम की व्याख्या : उपरोक्त तालिका संख्या 03 में अधिगम शैली प्रपत्र पर प्राप्त 200 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों (जिनमें 100 कला वर्ग के विद्यार्थी तथा 100 विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी है) के प्रदत्तों का मध्य मान क्रमश : 169.08 व 173.26 और मानक विचलन क्रमश : 8.39 व 7.90 तथा क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान 3.62 है और प्राप्त क्रान्तिक अनुपात (CR) का मान स्वतंत्रता के स्तर कत्रि 198 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर सारणी मान 1.98 से अधिक है। इसलिए यह प्राप्तमान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है और प्रतिपादित परिकल्पना–HO3 को अस्वीकार किया जाता है। इस प्रकार यह परिणाम इंगित करता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों व कला वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली में सार्थक अंतर है।

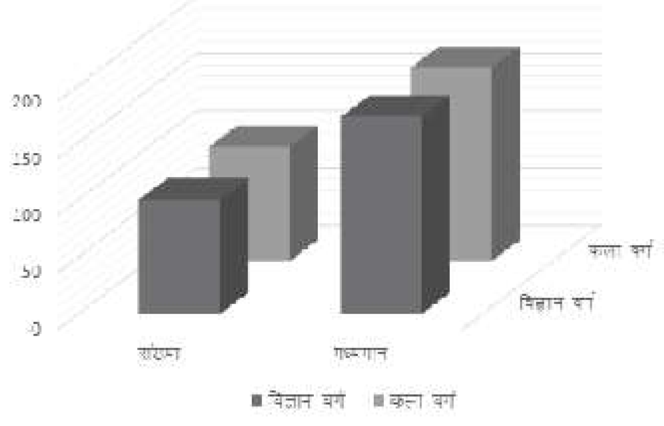

दण्ड आरेख संख्या–1.3

परिणाम की विवेचना : उपरोक्त परिणाम इंगित करते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली कला वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली से बेहतर है क्योंकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी किसी भी कार्य को करने में अपने प्रयोगात्मक शैली व गहन सोच व अभिसरण और समयोजनात्मक शैली का प्रयोग करते है जबकि इसके विपरीत कला वर्ग के विद्यार्थी अपसारी चिंतन का प्राथमिकता देते है (रविकांत और मुरलीधर सिंह, 2015 द्वारा उद्धृत)।

निष्कर्ष :

अध्ययन से प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की अधिगम शैली छात्राओं की अधिगम शैली से अधिक बेहतर है और जब ग्रामीण विद्यार्थियों और शहरी विद्याथियों का अलग–अलग अध्ययन किया गया तब यह ज्ञात हुआ कि शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली ग्रामीण विद्यार्थियों से बेहतर है और इसी प्रकार जब कला वर्ग के विद्यार्थियों और विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन किया गया तब यह ज्ञात हुआ कि कला वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में, विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का शैक्षिक परिणाम अधिक बेहतर था, क्योंकि वे किसी भी कार्य को करने के लिए प्रयोगात्मक शैली का प्रयोग करते है।

शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन किया गया है जिसमे यह बताने का प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों की अधिगम शैली उनकी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करती है। हम निकट भविष्य में 21वीं सदी में प्रवेश कर रहें हैं। जनसंख्या विस्फोट और तेजी से बढते ज्ञान के कारण हमारा शैक्षणिक ढांचा सिकुड़ गया है इसलिए ज्ञान और कौशल के आधार पर हमें इसमें संतुलन बनाना होगा। हमारी शिक्षा का पुनर्गठन करने के लिए तथा उनके बीच स्वयं को और समाज को शिक्षित करने के लिए आधुनिकीकरण का सहारा लेना होगा। आज यह कहा जा सकता है कि भारत का भाग्य उसकी कक्षाओं में आकर ले रहा है। हमारी स्कूली शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना का जागरण करना होना चाहिए। हम राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य में जो प्रगति प्राप्त करते है वह सीधे तौर पर हमारे स्कूल, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त कर निकलने वाले विद्यार्थियों के गुणों पर आधारित होती है इसलिए यदि हम विद्यार्थियों को प्रभावपूर्ण तरीकों से अधिगम कराएंगे तब उससे उनकी अधिगम शैली भी प्रभावित होगी और उनका शैक्षणिक परिणाम भी प्रभावित होगा।

सन्दर्भ सूची :

- **Aremu, O.A. (2000)** *Impact of home school and government primary school pupils' academic performance, Exceptional child, 5(1),100-110.*
- **Kant, Ravi. (2015)** *Relationship between Learning Styles and Scientific Attitude of Secondary School Students and their Achievement in Science Subject. Journal of Educational Sciences and Psychology. 5.1-10.*
- **Kulwinder Kaur (2022)** *Achievement In Social Science Among Secondary School Students In Relation to Learning Styles School Environment and Parential Involvement,* Department of Education, Punjab University. Retrieved Jan 30, 2024. from: http//hdl.handle.net/10603/435276.

- **Misra, K.S. (2012)** *Manual for learning style inventory*, Agra : National Psychological Corporation.
- **Nanaware, R.B. & Baviskar, C. (2023)** *A Study on Academic Achievement In Relation To Learning Style of Senior Secondary School Students*. MIER Journal of Educational Studies Trends and Practices,13(1),180-192. https//doi org/1052634/mier/2023/v13/i1/2357.
- **Reiff, J. C., & National Education Association, W. D. (1992)** Learning Styles. What Research Says to the Teacher Series.
- **Rohtash, (2021)** *Academic Achievement and Learning Styles of Secondary School Students in Relation to Extraversion, Introversion Divergent thinking and Locous of Control*, Department of Education, Maharshi Dyanand University. Retrieved Jan 15,2024. from: http// hdl.handle.net/10603/375440.
- **Singh, Rajveer. (2020)** *A Study of Achievement Motivation Among Secondary School Students In Relation to Their Learning Style School Environment and Self Concept,* Department of Education, Maharshi Dyanand University. Retrieved Jan 15,2024. from: http// hdl.handle.net/10603/326477.
- **Singh, Sombir. (2021)** *A Study of Academic Achievement and Academic Anxiety of Secondary School Students In Relation to Their Home Environment, Learning Style and School Environment*, Department of Education, Maharshi Dayanand University. Retrieved Jan 29, 2024. from: http//hdl.handle.net/10603/427084.
- **भार्गव, महेशचन्द्र (1984)** आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन. आगरा रूहरप्रसाद, भार्गव।
- **गुप्ता, एस०पी० (2007) :** उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन. from:http://hdl/ handle. net@10603@336554।
- http:@@www.simplypsychology.org@vygotsky.html.
- http:@@www.shpdhganga.infilbnet.ac.in
- http:@@www.educationindia.net@download@ Research & Abstracts.pdf